कुहेडग—१ अदरक (प्रसा २१०)। २ अजवायन।

कूइय—दुग्ध-वराटिका, खोआ, मावा (आवटि प १३)।

कूचित—छेना, भोज्य पदार्थ-विशेष (अंवि पृ २२०)।

कूचिया—छेना (नंदीटि पृ १८२)।

कूड—जाल, फंदा (बृभा २३९०; दे २।४३)।

कूडाहच्च—कुचल कर मारना (भ ७।२०२)।

कूणिअ—ईषद् विकसित (दे २।४४)।

कूभंड—बड़ा फल, कुम्हडा (अंवि पृ २३१)।

कूभंडग—कुम्हडा, कुष्मांडक (अंवि पृ २३९)।

कूभंडी—वल्ली-विशेष (अंवि पृ ७०)।

कूय—जहाज का मध्य-स्तंभ जहां पाल बांधा जाता है (निचू १ पृ ७४)। २ कुतुप, तैल-भाजन (ज्ञाटी प ६३)।

कूर—थोड़ा (प्रा २।१२९)।

कूरउंडिया—खाद्य-विशेष (आवचू २ पृ ९९)।

कूरओडिया—खाद्य-विशेष (आवहाटी २ पृ ८८)।

कूरखोट्ट—ओदन का भोजन (ओटी पृ ३७९)।

कूल—१ तिनका—'इतरोवि य तं नेड्डं घेत्तूणं पादवस्स सिहराओ। कूलं एक्केक्कं अंछिऊण तो उज्झती कुवितो॥ (आवचू १ पृ ३४५)। २ सेना का पिछला भाग (दे २।४३)।

कूव—१ चुराई हुई चीज को लाने वाला (ज्ञा १।१६।२०९)। २ चुराई हुई वस्तु की खोज में जाना (दे २।६२)।

कूवग्गाह—तैलपात्र को धारण करने वाला (भ ९।२०४)।

कूवल—जघन-वस्त्र, अधोवस्त्र (दे २।४३)।

कूविय—१ चोर की खोज करने वाला—'सुबहुस्स वि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था' (ज्ञा १।१८।१८)। २ चुराई हुई वस्तु को खोजकर लाने वाला (पिनि ११९)।

कूवियत्त—मुक्तता (दिलाना)—'जो कुणति कूवियत्तं, सो वण्णं कुणति तित्थस्स' (निभा ३५१)।

'कूविय'बल—१ मोष-व्यावर्तक सेना। २ चोरों की खोज करने वाली सेना (ज्ञा १।१८।१८)।

कसार—गर्त्त, खड्डा (दे २।४४)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org